रिकॉर्ड:- जाग सजनियां जाग नवयुग..... ओम शान्ती प्रातः क्लास 25-1-1967

बच्चों को ज्ञानी तू आत्मा बनाने के लिये ऐसे-2 जो गीत है वो सुनवा कर फिर उसका अर्थ कराना चाहिये। तो बाबा खुलेगी। मालूम पड़ेगा कहां तक इनको सृष्टी के आद मध्य अन्त का ज्ञान याद है। तुम बच्चों की बुधी में तो ऊपर से लेकर मूल वतन सुक्ष्म वतन स्थूल वतन के आद मध्य अन्त का सारा ज्ञान चमकता है। बाप के पास भी सही ज्ञान है। जो सुनाते है। यह है बिलकुल नया ज्ञान। भल शास्त्र आद में नाम है परन्तु नाम लेने से अटक पड़ेंगें। डिबेट करने लग पड़ेंगें। यहां तो बाप बिलकुल सिम्पल समझाते है। भगवानोवाच्य मुझे याद करो। मैं ही पतित पावन हूं। कब भी कृष्ण वा विष्णु शंकर आद को पतित पावन नही कहेंगें। सुक्ष्म वतन वासियों को भी तुम पतित पावन नही कहते हो तो स्थूल वतन का कोई मनुष्य पतित पावन कैसे हो सकता है। यह ज्ञान भी तुम्हारी ही बुधी में है। शास्त्रों की बुरी जड़ती आरगयू करनी ठीक नही है। बहुत वाद-विवाद हो जाता है। एक दो को लाठियां मार कर लड़ पड़ती है। तुमको तो बहुत सहज समझाया जाता है। शास्त्रों की बातों में टूमच नही जाना है। मूल बात है ही आत्म अभिमानी बनने की। अपने को आत्मा समझना है और बाप को याद करना है। यह श्रीमत है मुख्य है बाकी है डिटेल। बीज कितना छोटा होता है। बाकी झाड़ का है विस्तार। जैसे बीज में सारा ज्ञान समाया हुआ है वैसे यह सारा ज्ञान भी बीज में समाया हुआ है। तुम्हारी बुधी में बीज और झाड़ दोनों आ गये है। जिस प्रकार तुम जानते हो। और कोई समझा ना सके। झाड़ की आयु ही लम्बी लिख दी है। बाप बैठ समझाते है बीज वा झाड़ वा ड्रामा चक्र का पूरा राज़। तुम हो स्वदर्शनचक्रधारी। कोई नया आवें और बाप महिमा करें कि स्वदर्शनचक्रधारी बच्चों को कोई समझ ना सकें। वो तो अपने को बच्चा ही नही समझते है। यह बाप भी गुप्त है। तो नालेज भी गुप्त है। वर्सा भी गुप्त है। नया कोई यह सुन कर मूंझ पड़ेंगें। इसलिये पहले 7 दिन की भठी में बिठाया जाता है। यह 7 रोज़ भागवत, वा रामायण आद रखा है। वास्तव में यह इस समय 7 दिन की भठी में रखा जाता है। तो बुधी में जो भी सारा किचरा है वो निकले और बाप से बुधी योग लग जावें। यहां सब है रोगी। सतयुग में यह रोग होते नही। यह आधा कल्प का रोग है। यह 5 विकार ही मनुष्यों को देखो दुख देते है। इससे ही मनुष्य बिमार हो पड़ते है। यह 5 विकारों का रोग बड़ा भारी है। वहां यह होता नही। वहां तुम देही अभिमानी रहते हो। जानते हो हम आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेते है। पहले से ही साक्षात्कार हो जाता है। अकाले मृत्यु कबी होती नही। तुमको काल पर जीत पहनाई जाती है। काल-2 महाकाल कहते है नां। महाकाल का भी मन्दिर होता है। सिख लोगों का फिर अकाल तख्त होता है। वास्तव में अकाल तख्त यह है (माथा) जहां आत्मा विराजमान करती है। सब आत्मायें इस अकाल तख्त पर बैठी है। यह भृकुटी है तख्त। आत्मा इस तख्त पर बैठने वाली है। आत्मा अविनाशी है। बाप को अपना तख्त तो है नही। वो आकर इनका यह तख्त लेते है। इस तख्त पर बैठ कर तुम बच्चों को ताऊसी तख्त नशीन बनाते है। तुम जानते हो वो ताऊसी तख्त कैसा होगा। जिस पर यह लक्ष्मी नारायण विराजमान होते होंगें। ताऊसी तख्त तो गाया हुआ है नां। विचार करना है उनको भोला नाथ भगवान क्यों कहा जाता है? कृष्ण को थोड़ेई भोलानाथ कहते है। भोला नाथ भगवान कहने से बुधी ऊपर चली जाती है। साधु सन्त आद ऊंगली से इशारा भी ऐसे ही देते है एक उनको याद करो। यथार्थ तो कोई जान नही सकते। अभी पतित पावन बाप खुद आकर कहते है कि मुझे याद करो। तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावें। गैरन्टी है। गीता में भी यह लगा हुआ है। परन्तु गीता का एक मिसाल निकालेंगें तो वो 10 निकालेंगें। इसलिये दरकार नही है। जो शास्त्र आद पढ़े हुये है वो समझेंगें हम लड़ सकेंगें। तुम जो इन शास्त्रों आद को जानती ही नही हो। उनको तो कभी नाम भी नही लेना चाहिये। सिर्फ बोलो भगवान कहते है मुझे अपने बाप को याद करो। उन्हें ही पतित पावन कहा जाता है। गाते भी ऐसे ही है पतित पावन सीता राम। सन्यासी लोग भी जहां तहां धूनी लगाऐ रहते है। ऐसे मतमतान्तर तो बहुत है नां। तो यह गीत कितना सुन्दर है। ड्रामा प्लान

ध्यान अनुसार कल्प-2 ऐसे-2 गीत बनते है। जैसे कि तुम बच्चों के लिये ही बैठ की बनायें हुयें है। ऐसे-2 बहुत अच्छे-2 गीत है। जैसे नैन हीन को राह.... यह गीत भी अच्छा है। प्रभु कोई कृष्ण को थोड़ेई कहते है। प्रभु तो ईश्वर निराकार को ही कहेंगें। यहां तुमतो कहते हो बाबा। परम-पिता परम + आत्मा परमात्मा। है तो वो भी आत्मा ही नां। यह अर्थ भी तुम्हारे बिना और कोई नही जानते। भक्ति ...में बहुत टूमच में चले गये है। यह बिलकुल सिम्पल बात है। अल्फ और बे। बस। अल्फ अल्लाह बे बादशाही। कितनी सिम्पल बात है। बाप को याद करो तो तुम स्वर्ग के मालिक बनेंगे। परन्तु यह ल-ना स्वर्ग के मालिक सम्पूर्ण निरविकारी थे नां। तो बाप को याद करने से ही तुम ऐसे सम्पूर्ण बनेंगे। जितना जो याद करते है और सर्विस करते है इतना ही वो ऊंचा पद पाते है। वो समझ में भी आता है। स्कूल में स्टूडन्ट समझते नही है क्या कि यह कम पढ़ते है यह जास्ती पढ़ते है। यां यह फेल हो जावेंगें। जो पूरा अटेंशन नही देते है तो पिछाडी में बैठे रहते है। तो बाबा समझते है ऐसे -2 गीत बच्चों को घर में भी रखने चाहिये। इनको सुनने से भी बहुत रिफ्रेशमेन्ट आवेगी। किसीको इन पर समझा भी सकोगें। कैसे माया का फिर से परछाया पड़ा है। शास्त्रों आदमें तो यह बातें है नही कि कल्प की आयू 5000 वर्ष है। ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात। आधा -2 है। अब यह गीत भी तो कोई ने बनाया है नां। बुधीवानों की बुधी है बाप। तो कोई की बुधी में आया है जो बैठ बनाया है। इन गीतों आद पर भी तुम्हारे पास कितने ध्यान में जाते थे। एक दिन आवेगा जो इस ज्ञान केगीत गाने वाले भी तुम्हारे पास आवेंगें। बाप की महिमा में बैठ गीत गावेंगें जो घायल कर देंगें। ऐसे-2 आवेंगें। टयूनस पर भी मदार रहता है नां। गायन विद्या का भी बहुत नाम है। ऐसे तो अभी कोई है नही सिर्फ एक गीत बनाया था कितना मीठा कितना प्यारा.... बाप बहुत ही मीठा बहुत ही प्यारा है नां तब तो सबही उनको याद करते है। ऐसे नही कि देवतायें उनको याद करते है। चित्रों में राम के आगे भी शिव दिखाया है, राम पूजा कर रहे है। यह गलत है। देवतायें थोड़ेई किसीको याद करते है। वो तो है ही देवतायें; डीटीइज़्म। तुम भी अभी मनुष्य हो। फिर देवता बन जाओगें। देवतायें और मनुष्यों में रात दिन का फर्क है। वो ही देवतायें फिर मनुष्य बनते है। कैसे यह चक्र फिरता रहता है किसीको भी पता नही है। तुमको भी अभी ही पता चला है कि हम सच्चे-2 देवता बनते हैं। नई दुनिया में हम देवता कह लावेंगें। अभी ब्राह्मण हैं फिर देवता बनेंगें। अभी तुम बन्दर खाते हो। बाप कहते है तुम देवता थे अभीतुम 84 जन्म भोग विकारी बने हो। तुम ही देवताओंकी महिमा गाते थे। यह खुद ही जो इस जन्ममें पुजारी थे। श्रीनारायण की महिमा गाते थे। नारायण से बहुत प्रेम था। अब बन्दरखाते हैं हम सो बन रहे हैं। तो कितना खुशी का पारा चढ़ना चाहिये। तुम हो अननोनवारीयर्स सचमुच अन नोन वारीयर्स तुम गाये हुये हो। तुम नानवारीयर्स डबल अहिंसक हो। नां काम कटारी, नां वो लड़ाई। काम अलग चीज है क्रोध अलग चीज है। तो तुम हो डबल अहिंसक। नान वायोलेन्स सैना दिखाई है फिर उन्होंने वो सैना खड़ी कर दी है। महाभारी लड़ाई में सैना का नाम है। वास्तव में हो तुम शिव शक्तियां। मैजारटी तुम्हारी होने कारण शिव शक्ति सैना कहा जाता है। यह बातें बाप ही बैठ समझाते है। सन्यासी आद इन बातों को क्या जानें। अभी तुम बच्चे नवयुग को याद करते हो। दुनिया में कोई को भी नवयुग का पता नही है। वो तो समझते है चालिस हजार वर्षों बाद आवेगा। नवयुग क्या है यह सिर्फ तुम्हारी ही बुधी में है। सतयुग ही नवयुग है नां। यह तो बहुत क्लीयर है। तो बाबा राय देते है ऐसे-2 अच्छे-2 गीत सबके घर होंने से सुनने से रिफ्रैश भी होंगें। और कोई को समझावेंगें भी। यह सब युक्तियां हैं। इनका अर्थ भी सिर्फ तुम्ही समझ सकते हो। बहुत अच्छे-2 गीत अपने को रिफ्रैश करने के लिये रखने चाहिये। यह गीत बहुत मदद करते है। तो जिसकी मुरली खोलनी हो उससे अर्थ कराना चाहिये। मुख भी खुल जावेगा। खुशी भी होगी। बाकी जो जास्ती धारणा नही कर सकते है उनके लिये बाबा कहते है घर बैठे बाप को याद करते रहो गृहस्थ ... बाप को

। याद करो और पवित्र बनो। आगे पुरुष लोग कहते थे भगवान को तो घर में भी याद कर सकते है फिर मन्दिर आद में भटकने की क्या दरकार है। हम तुमको फोटो घर में दे देते है। यहां ही बैठ याद करो। धक्के खाने क्यों जाते हो। ऐसे बहुत पुरुष लोग स्त्रीयों को जाने नही देते थे। चीज तो एक ही है। पूजा करनी है और याद करना है। एक बार चीज देखी फिर मन्दिर में क्यों जाना चाहिये। वा उनकी चित्र भी रखनें की क्या दरकार है। जब कि एक बार देख लिया। फिर तो ऐसे भी याद कर सक्ते है। कृष्ण का चित्र तो है ही मोर मुकट धारी।तुम बच्चों नें सा0 भी किया है। कैसे वहां जन्म होता है।वो भी सा0 किया है। परन्तु तुम फोटो थोडेई निकाल सक्ते हो। स्कल्पटे कोई निकाल ना सकें। दिव्य दृष्टी सें सिर्फ देख ही सक्ते हैं। बना नही सक्ते है। वो पेन्ट आद नही कर सकतें भल होशियार पेन्टर हो। सा0 करें तो भी स्कल्पटरपिक्चर्स निकाल ना सकें। तो बाबा नें समझाया कोई सें भी आरगयू जास्ती मत करो। बोलो तुमको पावन बननें सें काम, और शान्ती मांगते हो। शिव बाबा की याद करो और पवित्र बनो। पवित्र आत्मा फिर यहां रह ना सकें। वो चली जावेगी वापस। शिव बाबा बिना और कोई पवित्र बना नही सक्ते तुम बच्चे जानते हो यह सारी स्टेज है। इस पर नाटक होता है। सारे स्टेज पर अभी रावण का राज्य है। सारे समुद्र पर सृष्टी खड़ी है। यह बेहद की बात है। वो है हद की। यह है बेहद की बात। जिस पर आधा कल्प दैवीराज्य आधा कल्प आसुरी राज्य होता है। यों खण्ड तो अलग-2 है। परन्तु यह है सारी बेहद की बात। तुम जानते हो हम गंगा जमना के मीठे पानी के कण्ठे पर ही होंगें। समुद्र आद पर जाने की दरकार नही रहती। यह जो गांधी धाम की तरफ द्वारका दिखाते है वो कोई समुद्र के बीच में होती नही है। द्वारका कोई दूसरी चीजनही है। तुम बच्चों नें सब सा0 किया है। शुरु में यह संदेशी और गुलजार यह बहुत सा0 करती थी। इन्होंनें बड़े पार्ट बजाये है।क्यों कि भटी में इनको बहलाना था। तो सा0 सें बहुत बहलें है। बाबा कहते है फिर पिछाड़ी में बच्चे बहुत बहलेंगें। वो पार्ट फिर और है। गीत भी है ना हमनें जो देखा वो तुमनें नां देखा। तुम जल्दी-2 सा0 करते रहेंगें। जैसे पढ़ाई के दिन नजदीक होते है तो पता पड़ जाता है कि हम कितनें मार्क सें पास होंगें। तुम्हारी भी पढ़ाई है अभी तुम जैसे कि नालेज फुल हो बैठे हो। सब फुल तो नही होते है। स्कूल में हमेशा नम्बरवार होते है। यह भी नोलेज है। मूल, सूक्ष्म, स्थूल तीनों ही लोकों का तुमको ज्ञान है। इस सृष्टी चैक्र को तुम बच्चे जानते हो। यह फिरता रहता है। सूक्ष्म और मूल वतन में चक्र नही होता है। चक्र यहां है। सतयुग त्रेता....यहां होते है। नया चक्र थोड़ेई बन सकेगा। यह सतयुग त्रेता... चक्र फिरता ही रहता है। सभी आत्मायें अविनाशी है। हर एक पुनर्जन्म लेते रहते है। वृद्धी होती रहती है। यह सब बातें तुम्हारी बुधी में है। 500 करोड़ आत्मायें है। कम जास्ती कुछ भी नही हो सक्ते। कितना सहज ज्ञान तुमको समझाया जाता है। बीज और झाड़। पहले फिर डार टार और टारियां गिनते थोड़ेई बैठ गिनेगें। डिटेल नहीसमझ सक्ते तो अच्छा बीज और झाड़ को याद करो। बाप को नालेज फुल कहते है नां। कौनसी नालेज है यह कोई भी नही जानते। नालेज फुल अर्थात जानीजाननहार। सबके दिलों को जाननें वाला। फिर ऐसे तो कह नां सकें कि सबके दिलों में भगवान है। सबके दिलों को जाननें वाला वो तो एक अलग हो गया नां। सबमें भगवान हो फिर तो जाननें की बात नही ठहरती। बाप कहते है तुमको जो नालेज दी है वो और कोई समझा ना सकें तुम्हारी है बेहद की दसायें कोई पर बृहस्पत की, कोई पर राहू की दसा बैठती है तो चंडाल आद जाकर बनेगें। यह है बेहद की दसा। वो हद की। बेहद का बाप बेहद की बातें सुनाते है बेहद का वर्सा देते है। तो बच्चों को कितना खुश होना चाहिये। हमनें अनेके बार बादशाही ली और गवाई है। यह तो बिलकुल पक्की बात है। नथिंग न्यू= न्यू। तब सदैव हर्षित रह सकेंगें। नही तो माया धुटका दिखलाती रहेगी। अच्छा जी बच्चों को याद प्यार मात-पिता बाप दादा का(बाकी हिस्सा फिर देखियेगा)